



मेंथा की वैज्ञानिक खेती

उमेश कुमार, रोबिन कुमार, प्रवीण कुमार यादव, ऋषिकेश यादव

मृदा विज्ञान विभाग, आचार्य नरेन्द्र कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या

Email ID: umeshkumar180500@gmail.com

Received: January, 2023; Revised: February, 2023 Accepted: February, 2023

प्रस्तावना

मेंथा की खेती हमारे देश में बहुत बड़े पैमाने पर की जाती है। इसे अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग नामों से जाना जाता है। मेंथा को कई देशों में पिपेरटा अथवा पिपरमिंट के नाम से भी जाना जाता है। मेंथा से एक विशेष प्रकार का बहु उपयोगी तेल निकाला जाता है। मेंथा

एक एरोमेटिक एवं मेडिसिनल फसल है। यह एक झाड़ीनुमा पौधा है। ज्यादातर मेंथा तेल का उपयोग हड्डी दर्द की जेल बनाने में किया जाता है। इसके तेल में विशेष प्रकार के तत्व पाए जाते हैं। जैसे- सिट्रोनेला 30-35%, जेरानियल-12-18%, जेरानियल एसीटेट 3-8%।

जलवायु

मेंथा की फसल एक समशीतोष्ण जलवायु एक पौधा है। अगर हम आम भाषा में कहें तो मेंथा की वानस्पतिक वृद्धि एवं विकास के लिए वर्षा का होना बहुत जरूरी है। कटाई के समय वायुमंडल साफ एवं सूर्य का प्रकाश पूरी तरह से हो होना चाहिए।

भूमि एवं भूमि की तैयारी

इसके लिए अच्छी वातरंध्रयुक्त गहरी बलुई दोमट भूमि सर्वोत्तम माना गया है। जिस का पीएच मान 6-7.5 होता है। तथा साथ ही में जल निकास का अच्छा व्यवस्था होना चाहिए। इसके लिए भूमि का भुरभुरा होना अति आवश्यक है। मेंथा की खेती करने के लिए भूमि गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से कम से कम एक बार अवश्य करें। उसके बाद 2 से 3 जुताई कल्टीवेटर या देशी हल से करें, और पाटा लगाकर भूमि को समतल करें। साथ ही में भूमि की तैयारी करते समय 200 से 300 कुंतल/हेक्टेयर की दर से गोबर की सड़ी खाद भूमि में मिलाएं।

नर्सरी

मेंथा की फसल की रोपाई के लिए जड़ों तथा सर्कर्स दोनों का ही प्रयोग किया जाता है। लेकिन ज्यादातर किसान भाई लोग जड़ का ही प्रयोग करते हैं, क्योंकि यह एक उत्तम विधि है। मेंथा की नर्सरी तैयार करने के लिए सर्वप्रथम खेत की जुताई करके तैयार कर लेते हैं। फिर खेत को छोटे-छोटे टुकड़ों में क्यारी बना लेते हैं। उसके बाद जड़ छोटे-छोटे टुकड़ों में लगभग 5 से 10 सेंटीमीटर काट लेते हैं। फिर पानी भरकर पलेवा करके जड़ों के टुकड़ों को क्यारी में बो देते हैं। इसकी नर्सरी लगाने का समय जनवरी माह के मध्य से फरवरी माह तक रहता है। ठंड अधिक होने के कारण इसकी जमाव में थोड़ा ज्यादा समय लगभग 40 से 45 दिन लग जाता है। इसकी रोपाई आलू, सरसों तथा मसूर का खेत खाली होने के बाद करते हैं। तथा कुछ जगहों पर गेहूँ का खेत खाली होने के बाद इसका रोपाई करते हैं।

उन्नतशील किस्में

सिम क्रांति, सिम उन्नति, कालका HY-77, शिवालिक, हिमालय, MSS-1, किरण, पंजाबी स्पियरमिंट-1, कोसी, मेंथा पिपरेटा- कुकरेल आदि किस्म मेंथा की उन्नतशील प्रजातियां हैं।

रोपाई की विधि एवं दूरी

सरसों तथा मसूर की फसल कटने के बाद नर्सरी को उखाड़ कर पलेवा किए गए खेत में रोप देते हैं। मेंथा की रोपाई के लिए लाइन से लाइन की दूरी 30 से 60 सेंटीमीटर तथा पौधों से पौधे की दूरी 15 सेंटीमीटर होनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

250-300 कुंतल गोबर की सड़ी हुई खाद अथवा कंपोस्ट का प्रयोग करते हैं। 120 से 150 Kg नाइट्रोजन, 50 से 60Kg फास्फोरस तथा 40 Kg पोटेशियम का प्रयोग करते हैं। मेंथा की फसल में तेल की मात्रा को बढ़ाने के लिए किसान भाई सल्फर का प्रयोग लगभग 20 किलोग्राम/हेक्टेयर की दर से प्रयोग करते हैं। नाइट्रोजन का 1/3 भाग तथा फॉस्फोरस, पोटेशियम एवं गोबर की खाद की पूरी मात्रा को भूमि की तैयारी करते समय भूमि में मिला देना चाहिए। तथा बचे हुए नाइट्रोजन को तीन बार में स्प्लिट डोज में देना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार के नियंत्रण के लिए फसल की निराई-गुड़ाई करना अत्यंत आवश्यक है। खरपतवार की रोकथाम के लिए पिंडीमिथाईलीन 30 EC के 3.3 लीटर मात्रा को 700 से 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से रोपाई के तुरंत पश्चात छिड़काव करें।

सिंचाई

मेंथा में सिंचाई फसल की किस्म की किस्म तापमान तथा आद्रता पर निर्भर करती है। पहली सिंचाई रोपाई के तुरंत पश्चात करनी चाहिए उसके बाद 15 से 20 दिन के अंतराल पर लगभग 10 से 12 सिंचाई करनी चाहिए।

कटाई

मेंथा की फसल की कटाई प्रायः दो बार करते हैं। पहली कटाई लगभग रोपाई के 100 से 120 दिन बाद करते हैं तथा दूसरी कटाई पहली कटाई के 70 से 80 दिन बाद करते हैं। कटाई के बाद फसल को 2 से 3 घंटे के लिए सुखा कर फिर उसे आसवन विधि से तेल को निकाल लिया जाता है।

उपज

दो कटाइयों में लगभग 250 से 300 कुंटल प्रति हेक्टेयर की दर से शाक तथा 125 से 150 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से तेल प्राप्त होता है।

